

एम. जी. रामचंद्रन, जयललिता और विजय की राजनीति का तुलनात्मक अध्ययन

राहुल कुमार,

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, दिल्ली विश्वविद्यालय

परिचय

भारतीय लोकतंत्र में राजनीति और जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के बीच गहरा संबंध रहा है, किंतु तमिलनाडु का राजनीतिक परिदृश्य इस दृष्टि से अत्यंत विशिष्ट है कि यहाँ सिनेमा ने केवल मनोरंजन का माध्यम होने तक स्वयं को सीमित नहीं रखा, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, राजनीतिक विचारधारा के प्रसार तथा जनमत निर्माण के प्रभावशाली साधन के रूप में भी कार्य किया। तमिलनाडु में अनेक ऐसे राजनीतिक नेता हुए जिन्होंने फिल्मी दुनिया में असाधारण लोकप्रियता प्राप्त करने के पश्चात राजनीति में प्रवेश किया और राज्य की सत्ता तक पहुँचे। इस परंपरा ने भारतीय राजनीति में एक विशिष्ट मॉडल प्रस्तुत किया, जहाँ लोकप्रिय संस्कृति और लोकतांत्रिक राजनीति का गहरा अंतर्संबंध दिखाई देता है। तमिलनाडु में सिनेमा और राजनीति का संबंध द्रविड़ आंदोलन के दौर से विकसित हुआ। बीसवीं शताब्दी के मध्य में द्रविड़ आंदोलन के नेताओं ने फिल्मों के माध्यम से सामाजिक न्याय, जातीय समानता, तर्कवाद, क्षेत्रीय अस्मिता तथा भाषाई अधिकारों जैसे विषयों को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाया। फिल्मी संवाद, गीत और कथानक केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहे, बल्कि उन्होंने राजनीतिक चेतना के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। परिणामस्वरूप, तमिल सिनेमा के कलाकारों की लोकप्रियता धीरे-धीरे राजनीतिक पूँजी में परिवर्तित होने लगी। इसी परिप्रेक्ष्य में एम. जी. रामचंद्रन (एमजीआर) का उदय अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। उन्होंने अपनी फिल्मों में न्यायप्रिय, गरीबों के संरक्षक और आदर्श नायक की छवि निर्मित की, जिसे जनता ने वास्तविक जीवन में भी स्वीकार किया। उनकी राजनीतिक सफलता इस बात का उदाहरण है कि जनप्रिय छवि, प्रभावी संगठन और जनकल्याणकारी नीतियों के समन्वय से कोई अभिनेता एक सफल जननेता बन सकता है। मुख्यमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल ने यह स्थापित किया कि फिल्मी लोकप्रियता यदि प्रभावी राजनीतिक नेतृत्व के साथ जुड़ जाए, तो वह दीर्घकालिक जनसमर्थन प्राप्त कर सकती है। एमजीआर के पश्चात जयललिता का राजनीतिक उदय भी तमिलनाडु की राजनीति का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। एक सफल अभिनेत्री के रूप में स्थापित होने के बाद उन्होंने सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया और अनेक राजनीतिक चुनौतियों का सामना करते हुए स्वयं को एक प्रभावशाली नेता के रूप में स्थापित किया। जयललिता का नेतृत्व केवल उनकी फिल्मी लोकप्रियता पर आधारित नहीं था, बल्कि उन्होंने संगठनात्मक क्षमता, प्रशासनिक दक्षता तथा महिला नेतृत्व की नई पहचान प्रस्तुत की। उनके शासनकाल में अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं ने उन्हें व्यापक जनसमर्थन प्रदान किया और वे तमिलनाडु की सबसे प्रभावशाली राजनीतिक हस्तियों में शामिल हुईं। समकालीन दौर में अभिनेता विजय का राजनीति में प्रवेश इस ऐतिहासिक परंपरा की नवीन कड़ी के रूप में देखा जा रहा है। विजय ने लंबे समय तक तमिल सिनेमा में लोकप्रिय अभिनेता के रूप में अपनी पहचान बनाई और उसके पश्चात उन्होंने राजनीतिक दल की स्थापना कर सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया। यद्यपि उनका राजनीतिक सफर अभी प्रारंभिक अवस्था में है, फिर

भी उनकी लोकप्रियता, युवा मतदाताओं में प्रभाव तथा सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर उनकी सार्वजनिक सक्रियता ने उन्हें तमिलनाडु की राजनीति में एक महत्वपूर्ण उभरते हुए नेता के रूप में स्थापित किया है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया, डिजिटल संचार तथा बदलते चुनावी व्यवहार ने उनके राजनीतिक अभियान को पूर्ववर्ती नेताओं से कुछ भिन्न स्वरूप प्रदान किया है। एमजीआर, जयललिता और विजय—इन तीनों नेताओं की राजनीतिक यात्रा समानताओं और भिन्नताओं से परिपूर्ण है। तीनों ने फिल्मी लोकप्रियता को राजनीतिक पहचान में परिवर्तित किया, किंतु उनके राजनीतिक उदय की परिस्थितियाँ, नेतृत्व शैली, संगठन निर्माण की रणनीतियाँ, चुनावी अभियान, जनसंपर्क के माध्यम तथा शासन संबंधी दृष्टिकोण अलग-अलग रहे हैं। जहाँ एमजीआर और जयललिता ने लंबे समय तक राज्य की सत्ता का नेतृत्व किया, वहीं विजय का राजनीतिक भविष्य अभी निर्माण की प्रक्रिया में है। इसलिए इन तीनों का तुलनात्मक अध्ययन तमिलनाडु की राजनीति के बदलते स्वरूप तथा लोकप्रिय संस्कृति के प्रभाव को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

यह अध्ययन इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करेगा कि तमिलनाडु में फिल्मी लोकप्रियता किस प्रकार राजनीतिक वैधता और जनसमर्थन में परिवर्तित होती है। साथ ही यह भी विश्लेषित किया जाएगा कि बदलते सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवेश में अभिनेता-राजनेताओं की भूमिका किस प्रकार परिवर्तित हुई है। विशेष रूप से सोशल मीडिया, युवा मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी, राजनीतिक संचार के नए माध्यम तथा चुनावी रणनीतियों ने इस प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित किया है।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य एमजीआर, जयललिता और विजय की राजनीतिक यात्रा का तुलनात्मक विश्लेषण करना है, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि तमिलनाडु में सिनेमा और राजनीति के मध्य स्थापित संबंध समय के साथ किस प्रकार विकसित हुए हैं। यह अध्ययन नेतृत्व शैली, जनाधार, राजनीतिक संचार, संगठनात्मक संरचना, चुनावी रणनीति तथा जनकल्याणकारी दृष्टिकोण जैसे प्रमुख आयामों के आधार पर इन तीनों नेताओं का विश्लेषण करेगा। साथ ही यह शोध भारतीय लोकतंत्र में लोकप्रिय संस्कृति और राजनीति के अंतर्संबंध को समझने में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा। इस प्रकार यह अध्ययन न केवल तमिलनाडु की राजनीति के विश्लेषण में सहायक होगा, बल्कि भारतीय राजनीति में सेलिब्रिटी नेतृत्व, लोकतांत्रिक वैधता तथा जनमत निर्माण की प्रक्रिया को समझने के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

शोध के उद्देश्य

1. तमिलनाडु की राजनीति और सिनेमा के मध्य विकसित ऐतिहासिक संबंधों का अध्ययन करना।
2. एम. जी. रामचंद्रन, जयललिता और विजय की राजनीतिक यात्रा का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
3. यह विश्लेषण करना कि फिल्मी लोकप्रियता किस प्रकार राजनीतिक लोकप्रियता और जनसमर्थन में परिवर्तित होती है।
4. तीनों नेताओं की नेतृत्व शैली, राजनीतिक विचारधारा तथा संगठन निर्माण की रणनीतियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें एम. जी. रामचंद्रन, जयललिता और विजय की राजनीतिक यात्रा, नेतृत्व शैली, जनसंपर्क, राजनीतिक संचार तथा चुनावी रणनीतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। उपलब्ध साहित्य, सरकारी दस्तावेजों, चुनावी आँकड़ों, राजनीतिक भाषणों तथा मीडिया स्रोतों का विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाले जाएंगे।

इस अध्ययन में तुलनात्मक अध्ययन विधि (Comparative Method) का उपयोग किया जाएगा। तीनों नेताओं की तुलना निम्नलिखित आधारों पर की जाएगी— राजनीतिक पृष्ठभूमि, फिल्मी लोकप्रियता, राजनीतिक विचारधारा, नेतृत्व शैली राजनीतिक दल और संगठन निर्माण, चुनावी प्रदर्शन, जनसंपर्क एवं राजनीतिक संचार, मीडिया एवं सोशल मीडिया का उपयोग। इस शोध पत्र में द्वितीयक स्रोत आकड़ों का उपयोग किया गया है जैसे शोध-पत्र एवं जर्नल लेख, पुस्तकें, समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ, निर्वाचन आयोग (Election Commission of India) के चुनावी आँकड़े, सरकारी रिपोर्टें।

यह अध्ययन मुख्यतः एम. जी. रामचंद्रन के राजनीतिक उदय से लेकर समकालीन दौर में विजय के राजनीतिक प्रवेश तक की अवधि को समाहित करेगा। इससे तमिलनाडु की राजनीति में अभिनेता-राजनेताओं की भूमिका के विकासक्रम का विश्लेषण संभव होगा।

साहित्य समीक्षा

तमिलनाडु की राजनीति और सिनेमा के अंतर्संबंध पर देश-विदेश के अनेक विद्वानों ने शोध किया है। इन अध्ययनों में यह स्पष्ट किया गया है कि तमिलनाडु में सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहा, बल्कि उसने सामाजिक परिवर्तन, राजनीतिक संचार, जनमत निर्माण तथा चुनावी राजनीति को गहराई से प्रभावित किया है। विशेष रूप से एम. जी. रामचंद्रन (एमजीआर), जयललिता और वर्तमान समय में विजय जैसे अभिनेता-राजनेताओं के संदर्भ में यह संबंध और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। उपलब्ध साहित्य इस विषय के ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आयामों को समझने में महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। तमिलनाडु में सिनेमा और राजनीति के संबंध को समझने के लिए द्रविड़ आंदोलन का अध्ययन अत्यंत आवश्यक माना जाता है। इस संदर्भ में **Robert L. Hardgrave Jr.** के अध्ययन विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उन्होंने अपने शोध में यह प्रतिपादित किया कि द्रविड़ आंदोलन के नेताओं ने फिल्मों को राजनीतिक प्रचार और जनसंपर्क का प्रभावी माध्यम बनाया। उनके अनुसार फिल्मी संवाद, गीत और कथानक के माध्यम से सामाजिक न्याय, भाषाई अस्मिता तथा क्षेत्रीय पहचान जैसे मुद्दों को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाया गया। Hardgrave का निष्कर्ष है कि तमिलनाडु में सिनेमा और राजनीति का संबंध किसी आकस्मिक घटना का परिणाम नहीं था, बल्कि यह एक सुविचारित राजनीतिक रणनीति थी जिसने द्रविड़ राजनीति को जन-आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया।

एम. एस. एस. पांडियन (M. S. S. Pandian) ने अपनी प्रसिद्ध कृति **The Image Trap: M.G. Ramachandran in Film and Politics** में एमजीआर की फिल्मी छवि और राजनीतिक सफलता का गहन विश्लेषण किया है। पांडियन का तर्क है कि एमजीआर ने अपनी फिल्मों में स्वयं को गरीबों के रक्षक, न्यायप्रिय और जनहितैषी नायक के रूप में प्रस्तुत किया। यह छवि केवल पर्दे तक सीमित नहीं रही, बल्कि जनता ने इसे वास्तविक जीवन में भी स्वीकार किया। उनके अनुसार एमजीआर की लोकप्रियता का आधार केवल अभिनय नहीं था, बल्कि उनकी सार्वजनिक छवि, जनसंपर्क और जनकल्याणकारी राजनीति भी थी। पांडियन का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि तमिलनाडु में फिल्मी छवि राजनीतिक वैधता प्राप्त करने का एक प्रभावशाली साधन बन सकती है।

Sara Dickey ने तमिल सिनेमा और दर्शकों के संबंधों पर अपने अध्ययनों में यह बताया कि फिल्मों केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक और राजनीतिक पहचान के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने यह विश्लेषण किया कि दर्शक अपने प्रिय अभिनेताओं के साथ भावनात्मक संबंध स्थापित करते हैं, जो बाद में राजनीतिक समर्थन में परिवर्तित हो सकता है। उनके अनुसार अभिनेता की नैतिक छवि, सामाजिक संवेदनशीलता तथा फिल्मों में निभाए गए पात्र जनता की राजनीतिक धारणाओं को प्रभावित करते हैं। यह निष्कर्ष एमजीआर और जयललिता के राजनीतिक उदय को समझने में विशेष रूप से उपयोगी है।

A. R. Venkatachalapathy तथा अन्य इतिहासकारों ने तमिल समाज में द्रविड़ आंदोलन, भाषा आंदोलन तथा सांस्कृतिक राजनीति के विकास का विश्लेषण किया है। उनके अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि तमिल सिनेमा ने क्षेत्रीय पहचान को मजबूत करने में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाई। फिल्मों के माध्यम से सामाजिक न्याय, जातीय समानता और क्षेत्रीय स्वाभिमान जैसे विचार व्यापक स्तर पर प्रसारित हुए, जिसने आगे चलकर राजनीतिक दलों को मजबूत जनाधार प्रदान किया।

जयललिता के राजनीतिक नेतृत्व पर उपलब्ध साहित्य यह दर्शाता है कि उनका राजनीतिक व्यक्तित्व केवल एमजीआर की उत्तराधिकारी के रूप में विकसित नहीं हुआ, बल्कि उन्होंने स्वयं को एक प्रभावशाली प्रशासक और जननेता के रूप में स्थापित किया। अनेक शोधों में उनके नेतृत्व, महिला सशक्तिकरण तथा जनकल्याणकारी योजनाओं का विश्लेषण किया गया है। विशेष रूप से 'अम्मा' ब्रांड के अंतर्गत संचालित योजनाओं को राजनीतिक संचार और जनकल्याण के सफल उदाहरण के रूप में देखा गया है। विद्वानों का मत है कि जयललिता ने अपनी फिल्मी लोकप्रियता को संगठनात्मक क्षमता और प्रशासनिक दक्षता के साथ जोड़कर दीर्घकालिक राजनीतिक वैधता अर्जित की।

समकालीन साहित्य में **अभिनेता विजय** की राजनीति पर शोध अपेक्षाकृत सीमित है, क्योंकि उनका राजनीतिक प्रवेश हाल के वर्षों की घटना है। उपलब्ध लेखों, समाचार-विश्लेषणों और प्रारंभिक अकादमिक चर्चाओं में यह उल्लेख मिलता है कि विजय का राजनीतिक अभियान पारंपरिक अभिनेता-राजनीतिज्ञों से कुछ भिन्न है। वे डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया, युवा मतदाताओं और समकालीन राजनीतिक मुद्दों पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। उनके राजनीतिक भविष्य पर अभी निश्चित निष्कर्ष निकालना संभव नहीं है, किंतु यह स्पष्ट है कि वे तमिलनाडु की अभिनेता-राजनीति की परंपरा को एक नए संदर्भ में आगे बढ़ा रहे हैं।

भारतीय राजनीति में सेलिब्रिटी राजनीति (Celebrity Politics) पर भी अनेक विद्वानों ने अध्ययन किए हैं। इन अध्ययनों में यह बताया गया है कि लोकप्रिय संस्कृति, मीडिया और व्यक्तित्व-आधारित राजनीति आधुनिक लोकतंत्र में अत्यंत प्रभावशाली बन चुकी है। टेलीविजन, डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया ने नेताओं की सार्वजनिक छवि के निर्माण को नई दिशा दी है। इससे अभिनेता-राजनेताओं के लिए व्यापक जनसमर्थन प्राप्त करना पहले की तुलना में अधिक आसान हुआ है, यद्यपि चुनावी सफलता अब केवल लोकप्रियता पर निर्भर नहीं रहती, बल्कि संगठन, नीतियों और राजनीतिक विश्वसनीयता पर भी आधारित होती है। उपलब्ध साहित्य का समग्र अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि एमजीआर और जयललिता की राजनीति पर पर्याप्त शोध उपलब्ध है, जबकि विजय के राजनीतिक जीवन पर व्यवस्थित अकादमिक अध्ययन अभी प्रारंभिक अवस्था में हैं। अधिकांश शोध सिनेमा और राजनीति के ऐतिहासिक संबंधों या किसी एक नेता के व्यक्तित्व तक सीमित हैं। तीनों नेताओं का तुलनात्मक अध्ययन, विशेषकर नेतृत्व शैली, राजनीतिक संचार, संगठन निर्माण, जनाधार और बदलती चुनावी रणनीतियों के संदर्भ में, अभी अपेक्षाकृत कम हुआ है। इसी प्रकार, सोशल मीडिया और डिजिटल राजनीति के युग में अभिनेता-राजनेताओं की बदलती भूमिका पर भी सीमित शोध उपलब्ध है। वर्तमान समय में राजनीतिक संचार, चुनाव प्रचार और मतदाता व्यवहार में तकनीकी परिवर्तनों ने नई परिस्थितियाँ उत्पन्न की हैं, जिनका तुलनात्मक विश्लेषण आवश्यक है। विशेष रूप से विजय की राजनीति की तुलना एमजीआर और जयललिता के पारंपरिक राजनीतिक मॉडल से करना इस शोध की नवीनता (Research Gap) को स्पष्ट करता है।

अतः उपलब्ध साहित्य यह संकेत देता है कि तमिलनाडु में सिनेमा और राजनीति का संबंध एक सतत विकसित होने वाली प्रक्रिया है। यद्यपि इस विषय पर पर्याप्त ऐतिहासिक और वैचारिक अध्ययन उपलब्ध हैं, फिर भी एम. जी. रामचंद्रन, जयललिता और विजय की राजनीति का तुलनात्मक अध्ययन अभी भी शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है। प्रस्तुत शोध इसी रिक्ति को भरने का प्रयास करेगा तथा यह समझने का प्रयास करेगा कि बदलते सामाजिक, राजनीतिक और तकनीकी परिवेश में अभिनेता-राजनीतिज्ञों की भूमिका किस प्रकार परिवर्तित हुई है।

सैद्धांतिक ढाँचा

सेलिब्रिटी राजनीति : सेलिब्रिटी राजनीति का तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें मनोरंजन, खेल या अन्य लोकप्रिय क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तित्व अपनी सार्वजनिक पहचान और लोकप्रियता के आधार पर राजनीति में प्रवेश करते हैं तथा जनता का समर्थन प्राप्त करते हैं। आधुनिक लोकतंत्र में मीडिया के विस्तार ने इस प्रवृत्ति को और अधिक प्रभावशाली बनाया है। नागरिक अक्सर प्रसिद्ध व्यक्तियों से भावनात्मक रूप से जुड़ते हैं, जिससे उनकी सार्वजनिक छवि राजनीतिक स्वीकार्यता में बदल सकती है। तमिलनाडु इस सिद्धांत का एक प्रमुख

उदाहरण है। एम. जी. रामचंद्रन और जयललिता ने फिल्मों में अर्जित लोकप्रियता को राजनीतिक शक्ति में परिवर्तित किया। वर्तमान समय में विजय भी इसी परंपरा के अंतर्गत राजनीति में सक्रिय हुए हैं। हालांकि प्रत्येक नेता की राजनीतिक सफलता केवल लोकप्रियता पर आधारित नहीं रही, बल्कि संगठन निर्माण, जनसंपर्क, राजनीतिक दृष्टि तथा सामाजिक मुद्दों पर सक्रियता ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राजनीतिक संचार सिद्धांत : राजनीतिक संचार से आशय उन सभी माध्यमों से है जिनके द्वारा राजनीतिक विचार, नीतियाँ, संदेश और नेतृत्व जनता तक पहुँचते हैं। इसमें भाषण, चुनावी प्रचार, समाचार माध्यम, फिल्में, सोशल मीडिया तथा अन्य संचार माध्यम सम्मिलित हैं। तमिलनाडु में फिल्मों ने राजनीतिक संचार का अत्यंत प्रभावशाली माध्यम विकसित किया। द्रविड़ आंदोलन के दौरान फिल्मों के संवाद, गीत और कथानक के माध्यम से सामाजिक न्याय, भाषाई अस्मिता और क्षेत्रीय पहचान के विचारों का व्यापक प्रसार हुआ। एम. जी. रामचंद्रन और जयललिता के समय फिल्में और पारंपरिक मीडिया राजनीतिक संचार के प्रमुख साधन थे, जबकि विजय के राजनीतिक अभियान में डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया और ऑनलाइन जनसंपर्क की भूमिका अधिक दिखाई देती है। यह परिवर्तन इस शोध का एक महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक पक्ष होगा।

व्यक्तित्व-आधारित नेतृत्व : व्यक्तित्व-आधारित नेतृत्व का सिद्धांत बताता है कि कई बार किसी नेता की व्यक्तिगत छवि, करिश्मा और जनप्रियता उसके राजनीतिक दल या विचारधारा से भी अधिक प्रभावशाली हो जाती है। ऐसे नेता जनता के बीच विश्वास, भावनात्मक जुड़ाव और प्रतीकात्मक पहचान का निर्माण करते हैं। तमिलनाडु की राजनीति में यह प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। एम. जी. रामचंद्रन को गरीबों के संरक्षक और जननायक के रूप में देखा गया। जयललिता ने 'अम्मा' की छवि के माध्यम से अपने नेतृत्व को जनकल्याण और संरक्षण से जोड़ा। विजय भी अपनी फिल्मी छवि, सार्वजनिक हस्तक्षेप और युवा समर्थकों के माध्यम से एक विशिष्ट राजनीतिक पहचान विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं। इस सिद्धांत के आधार पर यह अध्ययन करेगा कि तीनों नेताओं की व्यक्तिगत छवि ने उनके राजनीतिक समर्थन को किस प्रकार प्रभावित किया।

करिश्माई नेतृत्व सिद्धांत : जर्मन समाजशास्त्री Max Weber ने करिश्माई नेतृत्व (Charismatic Authority) की अवधारणा प्रस्तुत की। उनके अनुसार कुछ नेता अपनी असाधारण क्षमताओं, व्यक्तित्व, संचार शैली और जनता के विश्वास के कारण विशेष वैधता प्राप्त करते हैं। उनका नेतृत्व केवल औपचारिक पद पर आधारित नहीं होता, बल्कि जनता के स्वैच्छिक विश्वास और भावनात्मक समर्थन से सशक्त होता है। एम. जी. रामचंद्रन और जयललिता दोनों को करिश्माई नेतृत्व के उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। विजय के संदर्भ में यह अध्ययन करेगा कि क्या उनकी लोकप्रियता करिश्माई राजनीतिक नेतृत्व में परिवर्तित हो रही है या नहीं। साथ ही यह भी विश्लेषण किया जाएगा कि आधुनिक लोकतंत्र में करिश्मा किस प्रकार संगठनात्मक शक्ति और चुनावी रणनीति के साथ मिलकर राजनीतिक सफलता को प्रभावित करता है।

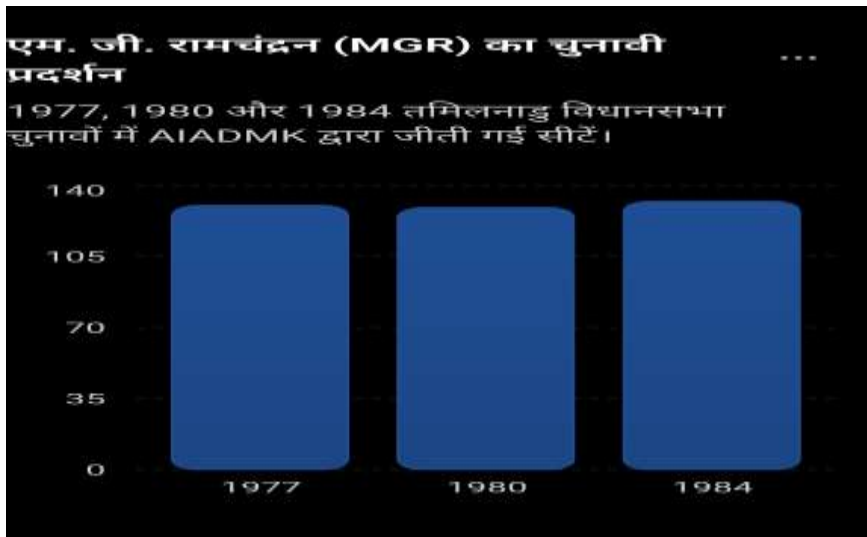
इन सभी सैद्धांतिक दृष्टिकोणों का संयुक्त उपयोग इस शोध को व्यापक विश्लेषणात्मक आधार प्रदान करता है। सेलिब्रिटी राजनीति यह समझने में सहायता करती है कि फिल्मी प्रसिद्धि राजनीतिक अवसरों में कैसे परिवर्तित होती है। राजनीतिक संचार सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि विभिन्न माध्यमों के द्वारा नेताओं ने जनता तक अपने संदेश कैसे पहुँचाए। व्यक्तित्व-आधारित नेतृत्व यह बताता है कि व्यक्तिगत छवि और जनविश्वास ने उनके नेतृत्व को किस प्रकार मजबूत किया, जबकि करिश्माई नेतृत्व सिद्धांत यह समझने में सहायक है कि व्यक्तिगत आकर्षण और जनसमर्थन के बीच क्या संबंध है। इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर एम. जी. रामचंद्रन, जयललिता और विजय की राजनीतिक यात्रा, नेतृत्व शैली, जनाधार, राजनीतिक संचार और चुनावी रणनीतियों का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाएगा। इससे यह स्पष्ट होगा कि तमिलनाडु की राजनीति में सिनेमा और राजनीतिक नेतृत्व का संबंध समय के साथ कैसे विकसित हुआ है तथा बदलते मीडिया और सामाजिक परिवेश में अभिनेता-राजनेताओं की भूमिका किस प्रकार परिवर्तित हो रही है।

विश्लेषण

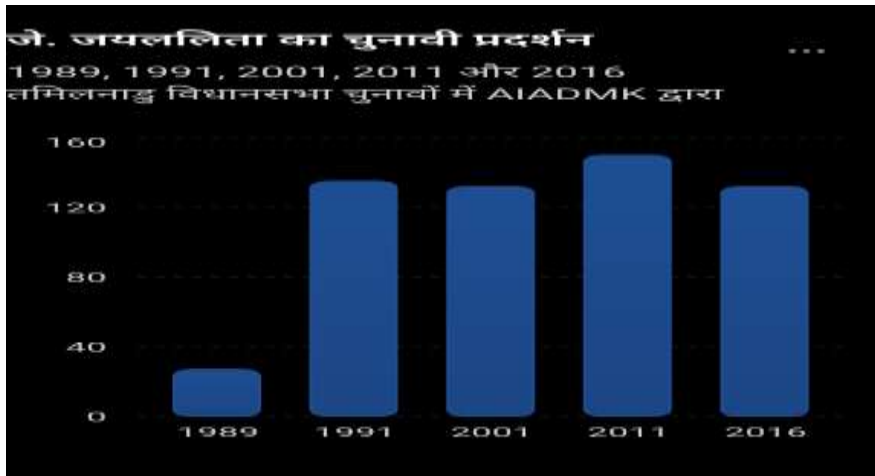
तमिलनाडु की राजनीति भारतीय लोकतंत्र में एक विशिष्ट स्थान रखती है, क्योंकि यहाँ सिनेमा और राजनीति के बीच गहरा एवं दीर्घकालिक संबंध विकसित हुआ है। अनेक अभिनेता अपनी लोकप्रियता के आधार पर राजनीति में आए, परंतु सभी को समान सफलता नहीं मिली। एम. जी. रामचंद्रन (एमजीआर), जयललिता और विजय तीन अलग-अलग समयों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इनकी राजनीतिक यात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन यह समझने में सहायता करता है कि समय, सामाजिक परिस्थितियों, मीडिया और मतदाता व्यवहार में आए परिवर्तनों ने अभिनेता-राजनीतिज्ञों की सफलता को किस प्रकार प्रभावित किया। एम. जी. रामचंद्रन का राजनीतिक उदय द्रविड़ आंदोलन की पृष्ठभूमि में हुआ। वे फिल्मों में ऐसे पात्र निभाते थे जो गरीबों, वंचितों और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने वाले नायक होते थे। जनता ने उनकी इस छवि को वास्तविक जीवन से भी जोड़ा। जब उन्होंने राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाई और बाद में अपनी पार्टी का गठन किया, तब उनकी फिल्मी लोकप्रियता एक मजबूत राजनीतिक पूंजी बन गई। उन्होंने जनसंपर्क, जनकल्याणकारी योजनाओं और सरल संवाद शैली के माध्यम से व्यापक जनाधार बनाया। उनके शासनकाल में मध्याह्न भोजन योजना जैसी लोकहितकारी नीतियों ने उनकी लोकप्रियता को और मजबूत किया। इससे स्पष्ट होता है कि फिल्मी प्रसिद्धि के साथ प्रभावी प्रशासन और जनकल्याणकारी कार्यक्रम भी राजनीतिक सफलता के लिए आवश्यक हैं।

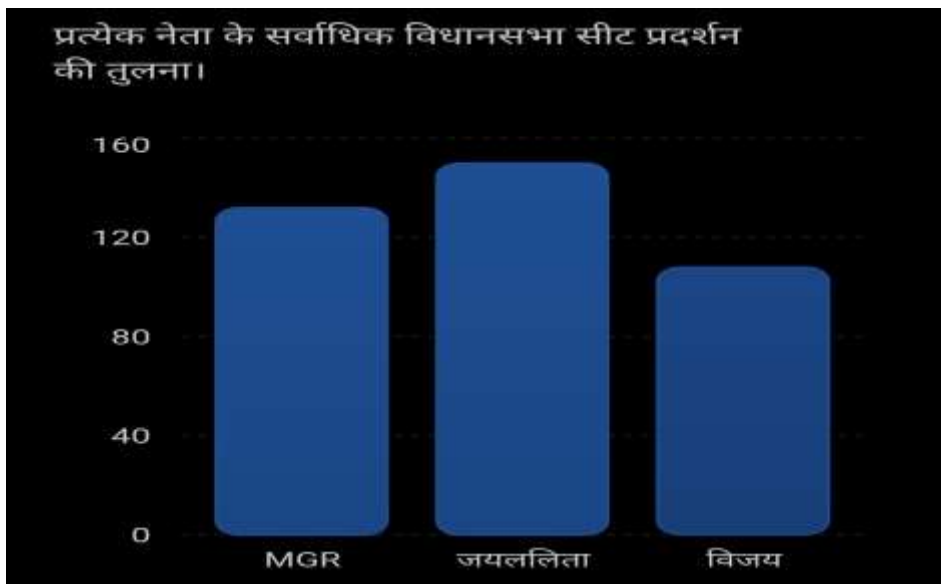
जयललिता का राजनीतिक सफर एमजीआर से भिन्न होने के साथ-साथ उनसे जुड़ा हुआ भी था। उन्होंने एक सफल अभिनेत्री के रूप में पहचान बनाई, लेकिन राजनीति में प्रवेश के बाद उन्हें अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। पुरुष-प्रधान राजनीतिक वातावरण में उन्होंने स्वयं को एक सशक्त नेता के रूप में स्थापित किया। उन्होंने प्रशासनिक क्षमता, संगठन पर नियंत्रण और कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाई। 'अम्मा' ब्रांड के अंतर्गत संचालित योजनाएँ केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं थीं, बल्कि उन्होंने जनता और नेतृत्व के बीच भावनात्मक संबंध भी स्थापित किया। इस प्रकार जयललिता की राजनीति केवल फिल्मी लोकप्रियता पर आधारित नहीं रही, बल्कि उन्होंने उसे प्रभावी शासन और राजनीतिक संगठन के साथ जोड़ा। विजय का राजनीतिक प्रवेश एक ऐसे समय में हुआ है जब भारतीय राजनीति और चुनावी संचार के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन आ चुके हैं।



आज सोशल मीडिया, डिजिटल प्रचार, ऑनलाइन अभियान और 24x7 समाचार माध्यम मतदाताओं की राय को तेजी से प्रभावित करते हैं। विजय ने अपनी फिल्मों के माध्यम से युवाओं में व्यापक लोकप्रियता प्राप्त की और बाद में राजनीति में प्रवेश किया। उनकी राजनीतिक रणनीति में डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और प्रत्यक्ष जनसंवाद का उपयोग प्रमुख रूप से दिखाई देता है। हालांकि उनकी राजनीतिक यात्रा अभी प्रारंभिक चरण में है, इसलिए उनके दीर्घकालिक प्रभाव का अंतिम मूल्यांकन करना अभी संभव नहीं है। फिर भी यह स्पष्ट है कि वे तमिलनाडु में अभिनेता-राजनीतिज्ञों की परंपरा को समकालीन संदर्भ में आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। तीनों नेताओं की तुलना करने पर अनेक समानताएँ दिखाई देती हैं। सबसे पहली समानता यह है कि तीनों ने अपनी फिल्मी लोकप्रियता को राजनीतिक पहचान में परिवर्तित किया। फिल्मों में निर्मित उनकी सकारात्मक छवि ने जनता के बीच विश्वास उत्पन्न किया। दूसरी समानता यह है कि तीनों ने आम जनता, विशेषकर निम्न और मध्यम वर्ग के साथ भावनात्मक जुड़ाव स्थापित करने का प्रयास किया। तीसरी समानता यह है कि तीनों ने जनसंपर्क को अपनी राजनीति का महत्वपूर्ण आधार बनाया।

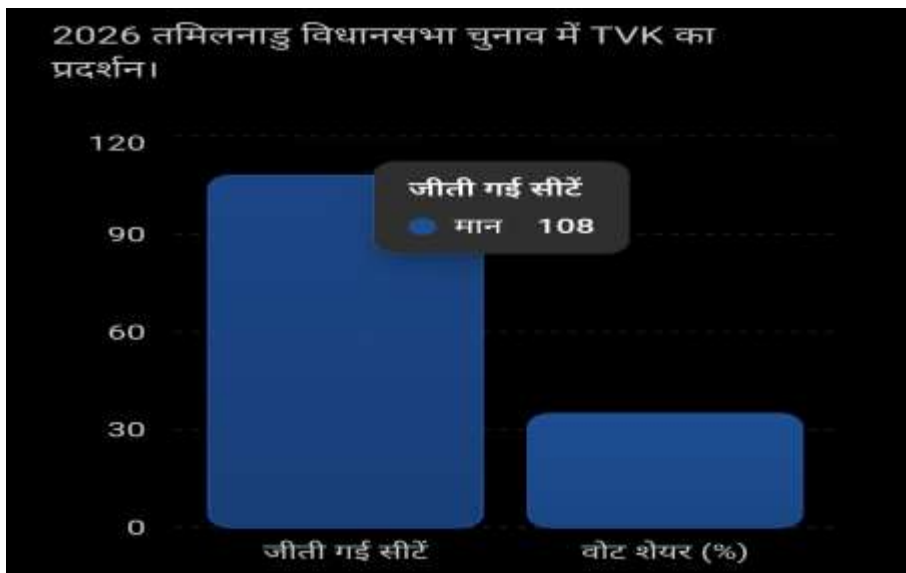


हालाँकि इसके माध्यम समय के साथ बदलते गए—एमजीआर और जयललिता के दौर में सार्वजनिक सभाएँ, फिल्में और पारंपरिक मीडिया प्रमुख थे, जबकि विजय के दौर में सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। इसके साथ-साथ महत्वपूर्ण भिन्नताएँ भी दिखाई देती हैं। एमजीआर का राजनीतिक उदय द्रविड़ आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि में हुआ, जबकि जयललिता ने एक स्थापित राजनीतिक संगठन का नेतृत्व संभालकर अपनी पहचान बनाई।



विजय का राजनीतिक प्रवेश ऐसे समय में हुआ है जब मतदाता अधिक जागरूक हैं और चुनावी प्रतिस्पर्धा पहले की तुलना में अधिक जटिल हो चुकी है। इसलिए उनके सामने केवल लोकप्रियता पर्याप्त नहीं होगी; उन्हें स्पष्ट नीतियाँ, संगठनात्मक क्षमता और प्रभावी नेतृत्व भी प्रदर्शित करना होगा। नेतृत्व शैली के संदर्भ में भी तीनों नेताओं के बीच अंतर दिखाई देता है। एमजीआर का नेतृत्व जनसंपर्क और लोककल्याण पर केंद्रित था। जयललिता का नेतृत्व अपेक्षाकृत अधिक केंद्रीकृत, अनुशासित और प्रशासनिक नियंत्रण पर आधारित था। विजय का नेतृत्व अभी विकसित हो रहा है, इसलिए उसकी अंतिम विशेषताओं का निष्कर्ष निकालना समय से पहले होगा। उपलब्ध सार्वजनिक गतिविधियों से यह संकेत मिलता है कि वे युवाओं, शिक्षा, रोजगार और सुशासन जैसे मुद्दों पर अपनी राजनीतिक पहचान बनाने का प्रयास कर रहे हैं। राजनीतिक संचार के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय परिवर्तन दिखाई देते हैं। एमजीआर के समय सिनेमा राजनीतिक संदेशों का प्रमुख माध्यम था। जयललिता के समय टेलीविजन और समाचार माध्यमों का प्रभाव बढ़ा। वर्तमान समय में सोशल मीडिया, डिजिटल अभियान और ऑनलाइन संचार ने राजनीतिक संवाद का स्वरूप बदल दिया है। विजय की राजनीति इसी परिवर्तित मीडिया वातावरण में विकसित हो रही है। इससे यह स्पष्ट होता है कि माध्यम बदल सकते हैं, लेकिन जनता से प्रभावी संवाद स्थापित करना आज भी राजनीतिक सफलता का एक महत्वपूर्ण आधार है। यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि अभिनेता

होने मात्र से राजनीतिक सफलता सुनिश्चित नहीं होती। भारत के विभिन्न राज्यों में अनेक लोकप्रिय अभिनेता राजनीति में आए, किंतु सभी सफल नहीं हुए। तमिलनाडु के उदाहरण से स्पष्ट होता है कि दीर्घकालिक सफलता के लिए जनविश्वास, संगठनात्मक शक्ति, राजनीतिक दृष्टि, नेतृत्व क्षमता और जनकल्याणकारी नीतियाँ भी उतनी ही आवश्यक हैं जितनी व्यक्तिगत लोकप्रियता। समग्र रूप से देखा जाए तो एम. जी. रामचंद्रन, जयललिता और विजय की राजनीतिक यात्राएँ तमिलनाडु की राजनीति के तीन अलग-अलग चरणों का प्रतिनिधित्व करती हैं। एमजीआर ने अभिनेता-राजनेता की सफल परंपरा स्थापित की, जयललिता ने उसे प्रभावी शासन और संगठनात्मक नेतृत्व के माध्यम से आगे बढ़ाया, जबकि विजय डिजिटल युग में इस परंपरा को नए रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं। यह तुलनात्मक अध्ययन स्पष्ट करता है कि तमिलनाडु की राजनीति में सिनेमा का प्रभाव आज भी महत्वपूर्ण है, किंतु वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों में केवल फिल्मी लोकप्रियता पर्याप्त नहीं है। सफल राजनीतिक नेतृत्व के लिए स्पष्ट वैचारिक दृष्टि, प्रभावी संगठन, विश्वसनीय जनसंपर्क तथा सुशासन की क्षमता भी अनिवार्य हो गई है।



एम. जी. रामचंद्रन (MGR), जे. जयललिता और विजय के चुनावी आँकड़ों के तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि तमिलनाडु की राजनीति में सिनेमा और राजनीति का संबंध केवल लोकप्रियता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संगठनात्मक क्षमता, नेतृत्व कौशल, जनकल्याणकारी नीतियों तथा प्रभावी राजनीतिक संचार पर भी आधारित है। एम. जी. रामचंद्रन ने 1977, 1980 और 1984 के विधानसभा चुनावों में लगातार विजय प्राप्त कर यह सिद्ध किया कि फिल्मी लोकप्रियता को मजबूत राजनीतिक संगठन और जनकल्याणकारी कार्यक्रमों के साथ जोड़कर दीर्घकालिक जनसमर्थन प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने अभिनेता से जननेता बनने का सफल मॉडल स्थापित किया, जिसने आगे की तमिल राजनीति को गहराई से प्रभावित किया। जयललिता ने प्रारंभिक राजनीतिक चुनौतियों के बावजूद 1991, 2001, 2011 और 2016 के चुनावों में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। विशेष रूप से 2011 में 150 सीटों की जीत और 1991 में लगभग 44.39 प्रतिशत मत प्राप्त करना उनके व्यापक जनाधार और प्रभावी नेतृत्व का प्रमाण है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि राजनीतिक सफलता केवल करिश्मे से नहीं, बल्कि प्रशासनिक क्षमता, संगठन पर नियंत्रण और जनहितकारी योजनाओं से भी सुनिश्चित होती है। विजय का राजनीतिक उदय तमिलनाडु की राजनीति के एक नए चरण का प्रतिनिधित्व करता है। 2026 के विधानसभा चुनाव में उनकी पार्टी Tamilaga Vettri Kazhagam (TVK) ने लगभग 34.92% मत प्राप्त करते हुए 108 सीटें जीतीं और राज्य की राजनीति में एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरी। यह प्रदर्शन दर्शाता है कि डिजिटल युग में भी फिल्मी लोकप्रियता राजनीतिक समर्थन जुटाने का महत्वपूर्ण माध्यम हो सकती है, किंतु इसकी सफलता संगठन, चुनावी रणनीति और जनविश्वास पर भी निर्भर करती है। तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो तीनों नेताओं की सफलता का आधार उनकी जनप्रिय छवि अवश्य रही, लेकिन उनकी राजनीतिक उपलब्धियों का वास्तविक कारण प्रभावी नेतृत्व, जनता से निरंतर संवाद, संगठनात्मक मजबूती तथा समयानुकूल राजनीतिक रणनीति रहा। जहाँ एम. जी. रामचंद्रन ने इस परंपरा की नींव रखी, वहीं जयललिता ने उसे सुदृढ़ किया और विजय ने समकालीन राजनीतिक परिवेश में उसे नए स्वरूप में प्रस्तुत किया। अतः यह अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि तमिलनाडु की राजनीति में अभिनेता-राजनेताओं की सफलता केवल उनकी फिल्मी लोकप्रियता का परिणाम नहीं है, बल्कि वह राजनीतिक नेतृत्व, जनकल्याण,

संगठनात्मक शक्ति और बदलते संचार माध्यमों के प्रभावी उपयोग का संयुक्त परिणाम है। भविष्य में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि विजय इस जनसमर्थन को दीर्घकालिक राजनीतिक स्थिरता और प्रभावी शासन में किस सीमा तक परिवर्तित कर पाते हैं।

संदर्भ सूची

1. Weber, M. (1978). **Economy and society: An outline of interpretive sociology** (G. Roth & C. Wittich, Eds.). University of California Press. (Original work published 1922)
2. Hardgrave, R. L., Jr. (1973). Politics and the film in Tamil Nadu: The stars and the DMK. **Asian Survey*, 13*(3), 288–305.
3. Hardgrave, R. L., Jr. (1979). **The Dravidian movement**. Popular Prakashan.
4. Pandian, M. S. S. (1992). **The image trap: M. G. Ramachandran in film and politics**. Sage Publications.
5. Dickey, S. (1993). **Cinema and the urban poor in South India**. Cambridge University Press.
6. Mazzoleni, G., & Schulz, W. (1999). Mediatization of politics: A challenge for democracy? **Political Communication*, 16*(3), 247–261.
7. Norris, P. (2000). **A virtuous circle: Political communications in postindustrial societies**. Cambridge University Press.
8. Street, J. (2004). Celebrity politicians: Popular culture and political representation. **The British Journal of Politics and International Relations*, 6*(4), 435–452.
9. Venkatachalapathy, A. R. (2009). **In those days there was no coffee: Writings in cultural history**. Yoda Press.
10. Turner, G. (2014). **Understanding celebrity** (2nd ed.). Sage Publications.
11. Election Commission of India. (2026). **General election to the Legislative Assembly of Tamil Nadu: Party-wise results**. Retrieved July 13, 2026, from [Election Commission of India] (<https://results.eci.gov.in/ResultAcGenMay2026/partywisewinresult>).